दोस्त की गर्लफ्रेन्ड की चुदास

“मेरा दोस्त अपनी गर्लफ्रेन्ड की चिपकू आदत से तंग आ गया था पर मुझे उसकी गर्लफ्रेंड पसंद थी. मैंने दोस्त से मिल कर ऐसा चक्कर चलाया कि वो लंड के लिए तड़पने लगी. …”

Story By: Akash Kumar (Akash013)
Posted: Monday, December 7th, 2015
Categories: जवान लड़की
Online version: दोस्त की गर्लफ्रेन्ड की चुदास

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

दोस्त की गर्लफ्रेन्ड की चुदास

अन्तर्वासना के पाठकों को मेरा नमस्कार..
मेरा नाम आकाश है। मैं राँची में रहता हूँ। मेरी उम्र 26 साल है और मैं एक साधारण सा ही लड़का हूँ.. पर हाँ.. मेरा लण्ड काफी लम्बा है। मेरे लण्ड की लम्बाई लगभग 7 इन्च है और यह मोटा भी है। इसके काले रंग के कारण मेरी गर्लफ्रेन्ड इसे नाग कहती है।

यह मेरी पहली हिन्दी सेक्स स्टोरी है जो मेरी जिन्दगी की एक रोचक घटना है। मैंने कुछ नाम बदल दिए हैं.. पर घटना को शत-प्रतिशत दर्शाने का हूबहू प्रयास किया है।

यह कहानी है सोनिका की चुदाई की.. जो उस समय 18 साल की थी। वो मेरे दोस्त राज की गर्लफ्रेन्ड है और आज भी मेरा लण्ड बड़े शौक से लेती है।
यह कहानी आप अन्तर्वासना सेक्स स्टोरीज डॉट कॉम पर पढ़ रहे हैं !

एक रोज राज मेरे पास आया और बोला- यार मुझे तेरी मदद चाहिए।
‘बोल..’
राज- यार.. ये सोनिका तो चिपकू है। उसकी वजह से कल मम्मी ने मेरी क्लास ले ली।
मैं बोला- तू उसे छोड़ क्यों नहीं देता ?
राज- नहीं यार.. वो मुझे बहुत प्यार करती है। वो कुछ गलत कर लेगी। तू कोई उपाय बता.. जिससे मैं बच भी जाऊँ.. और उसकी बुर भी चोदने को मिलती रहे।

कुछ देर सोचने के बाद मैं बोला- एक उपाय है.. पर तू मानेगा नहीं..
राज- अबे तू बोल तो.. मैं कुछ भी करूँगा.. बोल न..
‘उसे किसी और लौन्डे से चुदवा दे। फिर वो कभी तुझसे नहीं चिपकेगी।’ मैं जल्दी से बोला।

वो हैरत से बोला- वो कैसे.. ? क्या वो किसी और का लण्ड आसानी से ले लेगी ?
मैंने कहा- हाँ.. बस तू उसे मेरा नम्बर दे दे.. और कहना कि मम्मी ने तेरा फोन छीन लिया है.. जो भी मैसेज देना हो मुझे दे सकती है।

राज- ठीक है.. तू अगर ये कर सकता है तो मैं उसे तेरा नम्बर दे दूँगा। बस उसे लगना चाहिए कि मैं कुछ नहीं जानता।
मैंने कहा- ठीक है.. पर उसे मेरा नाम मत बताना और कुछ दिन अपना फोन ऑफ़ रखना..
राज उस रोज़ चला गया और दूसरे दिन सोनिका का फोन आया।
मैंने रिसीव करके कहा- हैलो..!
उधर से एक मीठी सी आवाज़ आई- हैलो.. राज है क्या ?

मैंने कहा- नहीं... राज अभी नहीं आया है.. बाद में फोन करना।
फिर रोज़ यही होता.. वो फोन करती और मैं यही जवाब देता और बिना उसे कुछ और पूछे या कहे फोन काट देता।
तीन दिन तक यही चलता रहा। चौथे दिन फिर उसका फोन आया।
मैंने कहा- हैलो।
सोनिका- हैलो.. राज आया था आपके पास ?
मैं बोला- नहीं.. पर शायद शाम को आए।
'अच्छा..'

कुछ पल रुक कर मैंने फिर कहा- बुरा मत मानना.. पर तुम अपना वक्त बर्बाद कर रही हो।
सोनिका- आप ऐसा क्यूँ कह रहे हैं ?
मैं- क्योंकि मुझे लगता है कि वो तुमसे अब प्यार नहीं करता है। वो कभी तुम्हारे बारे में पूछता भी नहीं है।
सोनिका- ओह्ह... तो अब आप ही बोलो मैं क्या करूँ ? मैं तो उसके बिना जिन्दा नहीं रह

सकती हूँ।
मैं- यही लाईफ है.. भूल जाओ उसे.. और नई शुरूआत करो।
सोनिका- मैं नहीं कर सकती.. आप नहीं समझोगे..

मैं- क्यों नहीं.. मेरी गर्लफ्रेन्ड ने मुझे दो महीने पहले छोड़ दिया। मैं भी तुम्हारी तरह उससे बहुत प्यार करता था।
सोनिका- तो अपने कोई और लड़की क्यों नहीं पटाई ?
मैं- बस ढूढ रहा हूँ.. कोई ढंग की लड़की भी तो मिलनी चाहिए ना..
वो हँसने लगी.. फिर बोली- मुझे बताओ किस ढंग की लड़की चाहिए आपको ? मैं खोज देती हूँ..

अब आप लोगों को बताने की जरूरत नहीं है कि लड़की हँसी तो फँसी।
मैं हँसते हुए बोला- रहने दो.. तुम्हारे जैसी तो नहीं चाहिए।
सोनिका चिढ़ते हुए पूछने लगी- क्यों मुझमें क्या खराबी है ?
मैं- नहीं बस तुम थोड़ी छोटी हो और तुम घर से निकल भी नहीं सकती हो।

सोनिका- तो क्या हुआ.. आपको राज ने नहीं बताया क्या.. कि मैं उससे कैसे मिलती थी ?
मैंने अन्जान बनते हुए पूछा- नहीं तो.. कैसे मिलती थीं ?
सोनिका- मैं उसे रात में मम्मी-पापा के सोने के बाद घर में बुलाती थी और फिर..
वो कहते-कहते रुक गई।

हालाँकि मुझे सब पता था.. फिर भी मैंने पूछा- फिर क्या ?

वो शर्माते हुए बोली- फिर बस.. रात भर प्यार करते थे और वो सुबह-सुबह चला जाता था।
मैं- अच्छा.. तुम तो बड़ी हिम्मत वाली हो।
वो फिर खिलखिला कर हँस पड़ी।

अब मैंने अपना जाल फेंका- एक बात बोलूँ.. बुरा तो नहीं मानोगी..
सोनिका- नहीं.. बोलिए।
मैं- क्या तुम मेरी गर्लफ्रेन्ड बनोगी ?
सोनिका- आप इतना कुछ जानने के बाद भी मुझे अपनाना चाहते हो ?
मैं- क्यूँ नहीं.. मैंने भी सेक्स किया है तो क्या मैं तुम्हारे लायक नहीं रहा।
सोनिका- वो बात नहीं है.. आप सच में मुझसे प्यार करना चाहते हैं ?
मैं- हाँ.. और वो भी आज ही..

सोनिका- मैं क्या कहूँ.. मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा है।
मैं- रहने दो.. तुमसे नहीं होगा। मैंने पहले ही कहा था.. तुम अभी छोटी हो.. और मेरा वो बहुत बड़ा है..
सोनिका- अगर ऐसी बात है तो फिर ठीक है.. मैं आपको रात में फोन करूँगी। आप मेरे घर आ पायेंगे ना।
मैं- हाँ मैं आ जाऊँगा.. पर सुनो..
सोनिका- क्या है ?

मैं- किस तो देती जाओ।
उसने मुझे ढेर सारी किस दी और फिर मैं रात का इन्तजार करने लगा।

असल में मुझे खुद यकीन नहीं था कि वो इतनी जल्दी पट जाएगी और इससे ये पता तो चल गया कि उसे बस लण्ड ही चाहिए था.. जो उसे कहीं से मिले.. पर हर हाल में चाहिए।

मुझे रात के बारह बजे फोन आया। मैंने फोन रिसीव किया।
मैं- हैलो।
उधर से सोनिका बोली- कहाँ हैं ?
मैं- घर में।

सोनिका- जल्दी से मेरे घर के पास आईए.. मैं दस मिनट में फिर से फोन करूँगी।

सोनिका का घर मेरे घर से एक किलोमीटर दूर है सो मैं जल्दी-जल्दी चलता हुआ उसके घर पहुँचा। तभी उसने फोन किया।
सोनिका- दीवार फाँद कर सीढ़ी के पास आइए।

मैंने तुरन्त फोन को बन्द किया और दीवार फाँद गया। सीढ़ी के पास पहुँचते ही सोनिका की फुसफुसाहट भरी आवाज आई- आ गए..!
मैंने कहा- हाँ.. ग्रिल तो खोलो..

वो नीचे आई पर अन्धेरे में कुछ ठीक से दिख नहीं रहा था.. वो ग्रिल खोलते हुए बोली- आप ना बड़े चालाक हो.. मुझे फँसा ही लिया।
मैं बोला- ठीक है.. मत फंसो.. मैं जा रहा हूँ।
मैं मुड़ गया। तब तक वो ग्रिल खोल चुकी थी.. उसने मेरा हाथ पकड़ लिया और बोली- अच्छा जी.. पहली मुलाकात में गुस्सा.. वो भी इतना..!
मैं जैसे ही उसकी ओर मुड़ा उसने कहा- ऊपर चलिए ना..

मैं उसके पीछे सीढ़ी पर चला गया.. हम दोनों सीढ़ी पर ही बैठ गए। अब अन्धेरे में कुछ-कुछ दिखने लगा था।
मैं- तो अब कैसी हो.. कुछ अच्छा लगा मिल कर?
सोनिका- हाँ.. पर डर भी लग रहा है।
मैंने उसके चेहरे को अपनी ओर मोड़ते हुए कहा- किस करूँ?

बिना आगे सुने मैंने अपने होंठ उसके होंठों पर रख दिए और फिर वो भी मुझे चूमने लगी। वो मेरी बाँहों में समाती चली गई।
मैंने उसे उठा कर अपनी गोद में बिठा लिया। अब मेरे हाथ उसके दोनों चूचों पर थे.. जो

थोड़े छोटे थे.. पर टाईट थे।
वो हल्के-हल्के सिसकारी लेने लगी और मुझे किस करने लगी।

उसने पटियाला सूट पहना था.. जिसमें नाड़ा नहीं होता है.. मैंने अपना बायां हाथ धीरे से उसके पजामे में डाल दिया… उसने मेरा हाथ पकड़ने की कोशिश की.. पर तब तक मेरा हाथ उसकी बुर के बालों तक पहुँच गया था।

मैंने धीरे-धीरे उसके बुर के दाने को उँगली से मसलना शुरू किया और उसके होंठों को चूसना जारी रखा। उसकी बुर बहुत पानी छोड़ रही थी। मैंने अब अपनी उँगली उसके बुर में पेल दी और उँगली से ही उसे चोदने लगा।

वो जोर-जोर से सिसकारियाँ ले रही थी- आह्ह.. स्स्स स्स्स्स.. आह्ह्ह स्स्स्स.. ओफ़्फ़्फ़.. ये क्या कर दिया.. आह्ह..
उसकी साँसें तेज़ हो गई थीं। मेरा लण्ड भी पूरा खड़ा हो चुका था और उसकी गाण्ड की दरार में धँस गया था।

सोनिका बोली- ओह्ह.. इतना बड़ा.. मैं कैसे लूँगी।
मैंने कहा- अरे प्यार से डालूँगा.. धीरे-धीरे.. आराम से ले लोगी.. अब प्यार करूँ ?
तो वो जल्दी से मेरी गोद से उठी और सीढ़ी पर ही लेट गई। मैंने उसकी पैन्टी और पजामा खोल दिया और अपनी जीन्स उतार कर उसके ऊपर चढ़ गया।

पर सीढ़ी पर उसे चोदने में मुझे बहुत असुविधा हो रही थी.. सो मैं अपना लण्ड डाल नहीं पा रहा था। मैंने उसे उठाया और कहा- यार यहाँ ठीक से नहीं हो पा रहा है.. खड़े-खड़े करूँ ?
वो बोली- कैसे ?

मैंने उसे दीवार की तरफ़ मोड़ दिया और उसे झुका कर अपना लण्ड डालने का प्रयास करने लगा.. पर उसकी हाईट कम होने के कारण मैं फिर लण्ड नहीं डाल पाया।
मैंने उसे कहा- तुम एक सीढ़ी ऊपर चढ़ो..
वो एक सीढ़ी ऊपर हो गई।

अब उसकी बुर मेरे लण्ड के बराबर आ गई थी.. मैंने अपना लण्ड उसकी बुर के मुँह पर रख कर एक हल्का सा धक्का मारा। उसके मुँह से हल्की चीख निकल गई- आह्ह.. ह्ह्ह..
पर उसने अपने अपने होंठों को दांतों से भींच लिया.. क्योंकि हम पकड़े जा सकते थे।

उसकी बुर से इतना पानी आ रहा था कि मेरा मोटा लण्ड एक बार में दो इंच अन्दर चला गया। उसकी बुर बहुत टाईट थी.. जो मुझे अपने लण्ड पर कसी हुई महसूस हो रही थी।
आखिर 18 साल की ताज़ी बुर थी.. वो भी बस एक लण्ड खाई हुई।
मैंने अब धीरे से एक और धक्का मारा वो फिर चीख उठी- आआअह्ह.. स्स्स.. तुम्हारा बहुत बड़ा है.. बहुत दर्द हो रहा है.. आह्ह.. आज छोड़ दीजिए.. स्स्स्स स्स्स्स.. फिर कभी डाल लेना..

पर मैं जानता था कि इसको आज छोड़ दिया.. तो फिर ये लड़की कभी चोदने नहीं देगी।
वैसे भी मेरा आधा लण्ड तो उसकी बुर में जा ही चुका था।
मैंने उसके मुँह पर हाथ रखा और एक जोर का धक्का मार कर पूरा लण्ड उसकी बुर में पेल दिया। वो एक पल को लड़खड़ा गई.. पर मैंने उसे गिरने नहीं दिया।

वो चीख नहीं पाई थी.. पर दर्द से बिलबिला गई थी, वो बुरी तरह हाँफ़ने लगी।
मैं थोड़ी देर तक उसे पकड़े रहा और उसकी गर्दन पर चूमता रहा। थोड़ी देर में वो कुछ ठीक हुई तो बोली- उफ्फ्फ.. आपने तो मेरी जान ही निकाल दी मेरी.. इस्स्स.. अब कीजिए ना..

मैंने अब धीरे-धीरे सोनिका को चोदना शुरू किया और वो कामुक सिसकारियाँ लेने लगी- ओह्ह.. स्स्स स्स्स.. स्स्स्स्स्स्स.. ऊफ्फ्.. स्स्स स्स्स आआह्ह्ह..

मैं हालांकि उसकी चुदाई जोर-जोर से करना चाहता था.. पर पकड़े जाने के डर से मैंने अपनी स्पीड को बढ़ाया नहीं।
मैंने उसकी चूत को धीरे से मसलना शुरू किया.. तो वो अपने चूतड़ों को गोल-गोल हिलाने लगी और मैं अपने लण्ड को और अन्दर तक डालने लगा।

मेरी हर ठाप पर वो 'स्स्स्स्स्.. आह्ह्ह्ह्ह..' करती और अपना चूतड़ हिलाती।
कभी मैं उसकी बुर के दाने को सहलाते हुए चोद रहा था.. तो कभी उसके चूचों को जोर-जोर से मसल रहा था।
करीब दस मिनट तक मैं उसे चोदता रहा और वो सिसकते हुए चुदती रही।

आखिर में मैंने थोड़ा जोर लगाया तो वो जोर-जोर से सिसकारी- ओह.. स्स्स्स्स्.. आआह्ह.. ओह्ह.. अन्दर ही गिराईएगा.. आआआ आअह्ह.. अन्दर.. उह्ह्ह... आह्ह..ह्ह..

मैंने दो-चार और जोरदार धक्के मारे और उसकी कमर को पकड़ कर अपना सारा माल उसकी बुर में ही डाल दिया। उसके मुँह से चरम पर पहुँचने वाली सीत्कार निकली- स्स्स् स्स्स.. आआआह्ह..
फिर हम दोनों कुछ पल को शान्त हो गए.. हम दोनों हाँफ रहे थे।

मैंने धीरे से कहा- मज़ा आया जान..
वो हँसने लगी।
वो मुड़ कर मेरे होंठ चूमते हुए बोली- आई लव यू..

मैंने धीरे से अपना लण्ड निकाला.. साथ ही उसका और मेरा मिश्रित कामरस उसकी बुर से

एक बड़े थक्के की तरह फ़त्त' की आवाज के साथ जमीन पर गिरा।
वो माल थोड़ा मेरे पैर पर भी लग गया।

वो अपनी पैन्टी पहनने लगी.. तो मैं बोला- अरे.. अभी तो रात बाकी है और प्यार नहीं करना है.. ?
सोनिका- नहीं आज इतना ही.. प्लीज़ समझा कीजिए ना.. मेरी हालत ठीक नहीं है.. मुझे बहुत दर्द हो रहा है।
मैं भी उसकी हालत जानता था.. सो मैंने उसे जोर नहीं दिया।

मैं- अच्छा तो मैं जाऊँ.. ?
सोनिका- हाँ.. पर ध्यान से बाहर जाईएगा.. कोई देख ना ले।
मैं- फिर कब मिलोगी.. ?
सोनिका- कल सोच कर बताऊँगी.. अब जाइए ना..

मैंने उसके चूतड़ों को सहलाते हुए उसे किस किया और बाहर आ गया, इधर-उधर देख कर फिर मैं दीवार फाँद कर रोड पर आ गया।

फिर मैंने सोनिका को कई बार उसके और मेरे घर पर चोदा और कल भी उसे चोदने के लिए अपने घर पर बुलाया है।
अब राज भी खुश है और मैं और सोनिका भी खुश हैं।

मेरे जीवन की ये घटना आप लोगों को कैसी लगी.. यदि आपको इस घटना के बारे में कुछ भी लगा हो.. तो मुझे मेल करके आपके बहुमूल्य विचार जरूर दें।
sexysky013@gmail.com

Other stories you may be interested in

बाप की हवस और बेटे का प्यार-3

इस सेक्स स्टोरी के पिछले भाग बाप की हवस और बेटे का प्यार-2 में अब तक आपने पढ़ा कि मनोज मुझे अन्दर ही अन्दर बहुत चाहता था और वो मुझे चोदना चाहता था. ये मैं जान चुकी थी. अब आगे.. […]
Full Story >>>

बाप की हवस और बेटे का प्यार-1

मित्रो, मैं पूनम चोपड़ा अन्तर्वासना की लेखिका हूँ. मेरी पिछली कहानी थी मेरी और मेरी कामवाली की चुदास आज मैं अपनी एक पाठिका की कहानी पेश कर रही हूँ. मेरा नाम सुधा है. जब मेरी उम्र बीस साल थी, तभी […]
Full Story >>>

डॉक्टर संग सेक्स भरी मस्ती

यह कहानी कुछ वर्ष पहले अन्तर्वासना पर प्रकाशित हुई थी. अब इसमें इस सेक्स स्टोरी का ऑडियो जोड़ा गया है. इसलिए दोबारा प्रकाशित की जा रही है. कैसे हो दोस्तो…मैं शालिनी जयपुर वाली…याद तो हूँ ना मैं… मेरी सेक्सी कहानियाँ […]
Full Story >>>

चुत की खुजली और मौसाजी का खीरा-4

मैंने मौसा जी की ओर देखा तो मौसा जी मुझे ही देख रहे थे। उनकी आँखों में वासना भरी थी, मैंने अपनी ओर देखा तो मुझे भी समझ आ गया। नाईटी घुटनों तक लंबी जरूर थी पर बीच में जांघों […]
Full Story >>>

चुत की खुजली और मौसाजी का खीरा-2

मेरी हवस की कहानी के पहले भाग में आपने पढ़ा कि मैं मौसी के घर रह रही थी और मेरी चुदाई नहीं हो रही थी. एक रात मैं फ्रिज के पास खड़ी होकर अपनी चूत में खीरा अंदर बाहर कर […]
Full Story >>>